

1,96, 1). या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्
RV. 5, 43, 9. 46, 4. 7, 16, 11. 9, 88, 3. उत्क्राम द्रविणोदा वाजिनं VS. 11, 21.
22. RV. 4, 15, 7. न डुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते 83, 1. AV. 19, 3, 2. 20, 2, 4.
Als Beiw. Agni's erscheint der nom. sg. °द्रास् im VĀRĀHA - P. nach
ÇKDr.

द्रविणोर्विद् (द्रविणस् + विद्) adj. dass.: भवां सोम द्रविणोर्वित्पुनानः
RV. 9, 97, 23.

द्रवितरु nom. ag. nach SĀ. Läufer (von 1. द्रु; passt nicht in den Zu-
sammenhang): श्रेद्राघो न द्रविता चेतति त्मन्नमर्त्यो ऽवर्त्र श्रोषधीषु RV.
6, 12, 3.

द्रवितुर् (von 1. द्रु) adj. laufend, eilend: आशवः RV. 8, 63, 14. रथ 10,
11, 9. श्रुं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवितुः पृथिव्यां सीरा अघिं 49, 9. स
नौ वृषन्सनिष्ठया सं घोरयो द्रवित्वा । धिपारिविद्धि पुरंध्या 8, 81, 15.

द्रवोकर (द्रव + 1. कर), °करोति flüssig machen, schmelzen; davon
°करण n. nom. act. ÇKDr. Wils.

द्रवीभू (द्रव + 1. भू), °भवति flüssig werden; °भूत flüssig geworden
Suçr. 1, 99, 8. MĀRK. P. 12, 33. द्रवीभूतं मन्ये पतति जलद्रवेण गगनम्
MĀRK. 83, 9. द्रवीभूतमिवात्पुलं मुञ्चती वारि नेत्रजम् MBh. 3, 2913.

द्रवोत्तर (द्रव + उत्तर) adj. zum grössten Theil flüssig, recht flüssig
Suçr. 1, 72, 1. 241, 21. 242, 4. 244, 7.

1. द्रव्य n. 1) Gegenstand, Ding, Stoff, Substanz AK. 1, 1, 4. 3, 4, 24,
156, 22, 215. TRIK. 3, 2, 8. क्रियागुणवत्समवापि कारणमिति द्रव्यलक्षणम्
KĀṇDA 1, 15. उपैत्यन्यज्ञकात्यन्यदृष्टे द्रव्यान्तरैश्चपि । वाचकः सर्वलिङ्गानां
द्रव्यादन्यो गुणः स्मृतः ॥ KĀr. im Ind. zu P. u. d. W. गण. विशेष्यभूतः
सम्भवावापन्नो ऽर्थः = द्रव्य P. 5, 1, 119, VĀRT. 3, Sch. द्रव्यशब्दा एक-
व्यक्तिवाचिनो कुरिर्कुरडित्यडवित्यादयः SĀH. D. 10, 15. ज्ञाति, गुण, द्रव्य,
क्रिया 12. अनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् KATHOP. 2, 10. अद्रुषितानां
द्रव्याणां द्रुषणे भेदेन तथा M. 9, 286. 8, 222. द्रव्याणां शुद्धिः 1, 113. 3, 57.
प्रणष्टाधिगतं द्रव्यम् 8, 34. द्रव्यरूत adj. 3, 143. विषयैरगैश्चापि सर्वद्र-
व्याणि योजयेत् 7, 218. सीता° Ackergeräthe M. 9, 293. सभा° MBh. 2, 75.
किं द्रव्यास्ताः सभाः 279. उपस्कार° VET. 4, 6. HIT. Pr. 46. °प्रकर्ष P. 5,
4, 11. एक° ein einzelnes Ding, Individuum KUMĀRILA bei MÜLLER, SL.
97. द्रव° flüssiger Stoff Suçr. 1, 8, 21. 169, 8. 194, 9. 330, 15. नित्यं द्रव्य-
मनित्या गुणाः 143, 5. leg. पक्वो नास्ति विना वीर्यादीर्यं नास्ति विना र-
सात् । रसो नास्ति विना द्रव्याद्रव्यं श्रेष्ठमतः स्मृतम् ॥ 130, 8. Arznei-
stoff (= भेषज TRIK. 3, 3, 313. H. an. MED.): विरेचन° 132, 3. वसन° 5.
2, 88, 16. 18. °गण Stoffreihe, Zusammenstellung von Heilstoffen ähn-
licher Wirkung, deren Suçr. 37 aufzählt 1, 137, 3. — द्रव्यदेवतागुण-
सामान्य KĀTJ. ÇR. 1, 7, 3. 13. 4, 16. 4, 3, 1. यथाद्रव्ये जनपदे यजेत तेषां य-
थोत्साहं दद्यात् 22, 2, 22. हेम° Schol. zu KĀTJ. ÇR. 413, 2. तस्मिन् द्रव्ये
ऽविव्यमाने यत्सामान्यतमं मन्येत तत्प्रतिनिध्यात् ÇĀNKH. ÇR. 3, 20, 9. 4,
1, 3. LĀTJ. 3, 12, 15. 10, 3, 4. GRHJASĀNGR. 1, 38. 54. यष्टुमोरभे कृत्वा द्रव्य-
परिचरम् R. GOBR. 1, 40, 23. द्रव्ययज्ञ adj. (neben तपोयज्ञ, योग°, स्वा-
ध्याय°) BHAG. 4, 28. नैतानि शक्यं निर्देष्टुं द्रुपतो द्रव्यतस्तथा । गुणतश्चैव
MBh. 5, 3579. रंग° Farbestoff P. 4, 2, 1, Sch. Neun Substanzen werden
in der Njāja-Philosophie gezählt (= द्वाद्वि H. an. MED.): पृथिवी, अग्नि,
तेजस्, वायु, आकाश, काल, दिश, आत्मन्, मनस् TARKAS. 2 (vgl. Suçr. 1,
151, 3). KĀṇDA 1, 5. द्रव्यादीन्कणभृगस्य विद्यस्य कारणम् (आर्क) VĀRĀH.

BRH. S. 1, 7. sechs bei den Gāina: जीव, धर्म, अर्धर्म, पुद्गल, काल, आकाश
COLLEB. Misc. Ess. I, 386. — 2) Gegenstand des Besitzes, Habe, Gut
AK. 2, 9, 90. H. 192. H. an. MED. द्रुपद्रव्यविक्रीन M. 4, 144. द्रव्यार्जनं च
नाशं च 12, 79. कुलं दहति राजाग्निः सपशुद्रव्यसंचयम् 7, 9. °वृद्धि 9, 333.
विवाप्त्यो वा भवेद्वाष्ट्रात्सद्रव्यः सपरिच्छदः 241. परद्रव्यापकारक 256.
ब्राह्मण° 198. पितृ° 208. दूत° N. 9, 27. 8, 5. BRĀHMAN. 2, 26. JĀG. 2,
119. PĀNĀT. 93, 25. सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाकुरुतमम् HIT. Pr. 4, 1, 12.
39. द्रव्यौघाः परिसंचिताः SĀH. D. 73, 12. Geld: पटादीनां मूल्यातिरिक्तं
द्रव्यं लाभः P. 5, 1, 47, Sch. — 3) ein taugliches Subject, = भव्य P. 5,
3, 104. AK. 3, 4, 24, 156. TRIK. 3, 3, 313. H. an. MED. द्रव्यमयं माणवकः
= अभिप्रेतार्थपात्रभूतः P., Sch. विनेतुरद्रव्यपरिच्छेदा ऽपि बुद्धिलाघवं प्र-
काशयति MĀLAV. 14, 23. Es ist übrigens nicht wahrscheinlich, dass PĀ-
NINI selbst bei द्रव्य gerade nur diese Bedeutung im Auge gehabt ha-
ben sollte; er kann vielmehr mit भव्य was da ist geradezu die bei
uns zuerst angegebene Bedeutung gemeint haben. — Die Lexicogra-
phen kennen noch folg. Bedd.: 4) Glockengut, = पित्तल TRIK. 3, 3, 313.
MED. = रीरि (d. i. रीरी) H. an. द्रव्यदातृ nach GĀTĀDH. im ÇKDr. un-
ter पित्तल. — 5) Salbe (विलेपन) MED. — 6) bescheidenes Benehmen
(विनय) H. an. — 7) ein geistiges Getränk Wils. angeblich nach H. an.
Im ÇKDr. wird als Beleg aus KULĀRṆAVAT. angeführt: सशब्दं न पिबेद्द्र-
व्यम्. — 8) = क्षीवि ÇKDr. nach MED., aber क्षीवि bezeichnet a. a. O.
wohl nur das Geschlecht des Wortes. — 9) a stake, a wager Wils. an-
geblich nach MED. — Vgl. द्रविण, द्रविणस्, अद्रव्य.

2. द्रव्य (von 2. द्रु) 1) adj. vom Baume kommend u. s. w. P. 4, 3, 161.
TRIK. 3, 3, 313. H. an. 2, 365. MED. j. 28. अथ यूय एको द्रव्य (etwa einen
Baum bildend) एको गर्त्य एकाः ÇĀNKH. Br. 10, 2. — 2) n. Lack, Gummi
H. an.

द्रव्यक adj. = द्रव्यं कुरति, वकति, आवकति P. 5, 1, 50.

द्रव्यगुण (1. द्र° + गु°) m. die Eigenschaft der Arzneistoffe, Titel eines
medizinischen Werkes oder eines Abschnittes in einem solchen Werke,
citirt im ÇKDr. u. आतप्य und von UśĀVAL. zu UśĀDIS. 3, 79. °संग्रह
Verz. d. B. H. No. 933.

द्रव्यप्रकृति s. u. प्रकृति.

द्रव्यल (von 1. द्रव्य) n. Substantialität: वङ्गिरनुज्ञो द्रव्यत्वात् TARKAS.
48. BUĀSHĀP. 23. 27.

द्रव्यमय (wie eben) adj. substanzial, stoffhaltig BUĀG. P. 4, 14, 21. प-
ञ्च BHAG. 4, 33. MBh. 12, 239. BHĀG. P. 4, 8, 54. 56. 7, 15, 48. In रास्यद्रव्य-
मय R. 2, 22, 28 gehört das suff. zum comp.

द्रव्यवत् (wie eben) adj. 1) der Substanz inhärent KĀṇDA 1, 8. —
2) begütert KĀTJ. ÇR. 22, 4, 7. MBh. 3, 14671. 5, 1651. R. GOBR. 2, 49, 26.
Suçr. 1, 123, 19.

द्रव्यवर्धन (1. द्र° + व°) m. N. pr. eines Verfassers eines Augural-
werkes: यच्च श्रीद्रव्यवर्धनः । आवत्तिकः प्राह नृपो महाराजाधिराजः ॥
VĀRĀH. BRH. S. 83, 2.

द्रव्यशुद्धि (1. द्र° + शु°) f. Reinigung verunreinigter Gegenstände M.
3, 57. 126. 146. Titel eines Werkes Z. d. d. m. G. 2, 342 (No. 200, e).

द्रव्यसारसंग्रह (1. द्र° - सार + सं°) m. Titel eines philosophischen
Werkes Verz. d. B. H. No. 683.